RKSK
Rashtriya Kishor
Swasthya Karyakram
राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम

ब्याह की सही उमर,
आसान ज़िंदगी का सफर

पिछले अंक में हमने पढ़ा कि नाबालिग निधि और नीता के बाल विवाह को माधव–मुस्कान ने कैसे रूकवाया। इस अंक में पढ़ेंगे कि मौसी ने रीता और मीता के ब्याह किन परिस्थितियों में किए ? इससे उनके जीवन में कैसे–कैसे बदलाव आए ?

माधव–मुस्कान के घर उनकी मौसी अपनी बेटियों रीता और मीता के साथ आई हैं। बहुत सालों बाद उनसे मिलकर सभी बहुत खुश हैं। बैठकर सुख–दुःख की बातें हो रही हैं

क्या कोई बाल विवाह रुकवाने नहीं आया ?
उस दूरन्दाज गाँव में जागरूकता की कमी थी।
उस कच्ची उमर में ही मुझ पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा।
हाँ, गृहस्थी माथे पड़ गई। जल्दी–जल्दी बच्चे हो गए।

मैं और बच्चे अक्सर बीमार रहते तो पिताजी ही इलाज कराते।
क्यों विकास जीजाजी नहीं कराते ?

कैसे कराते ? शादी के बाद आगे पढ़ नहीं पाए। वैसी ही नौकरी भी मिली। घर खर्च ही पूरा नहीं पड़ता।
बस तभी से दीदी ऐसी मुरझा गई। कमजोर आर्थिक स्थिति! पनप ही नहीं पाई।

पढ़ लिखकर कुछ करने के सारे अरमान धरे रह गए। सारे सपने बिखर गए।
दीदी, अच्छी पढ़ लिख गई होती तो नौकरी करके परिवार को सहारा देती।

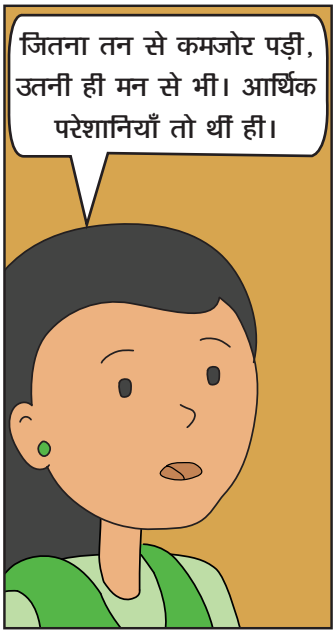
जितना तन से कमजोर पड़ी, उतनी ही मन से भी। आर्थिक परेशानियाँ तो थीं ही।

अब हम समझ रहे हैं कि यह सब इसके बाल विवाह के ही कारण हुआ।

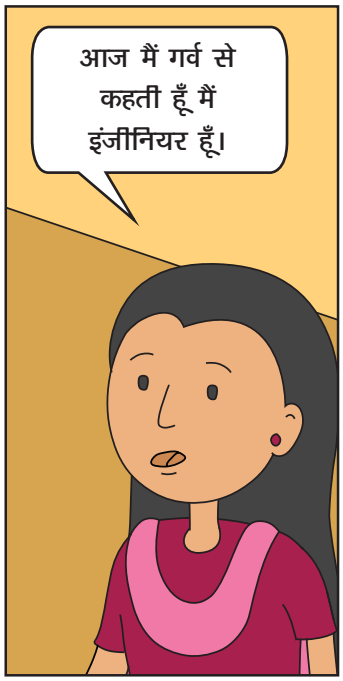

रिश्ता तो मीता के लिए भी आया था ?
हाँ, मैंने ही मना कर दिया। अभी नहीं करनी शादी। पहले पढ़ाई पूरी करूँगी।
शाबास दीदी, आपने बिल्कुल सही निर्णय लेने का साहस किया।
तुम्हारे मौसाजी ने भी कह दिया – दूध का जला हूँ, छाछ भी फूँक–फूँक कर पीयूँगा।
मीता की इच्छा देख हमने इसे पढ़ने शहर भेजा।
आज मैं गर्व से कहती हूँ मैं इंजीनियर हूँ।
मीता पढ़ी–लिखी थी, रिश्ता भी पढ़े–लिखे लड़के का आया।
दोनों वयस्क थे। अपने पाँवों पर खड़े थे। शादी के बाद इनको मेरे जैसी कोई दिक्कत नहीं आई।
हाँ, आज हम दोनों नौकरी कर रहे हैं। अपने सारे सपने पूरे कर पा रहे हैं।
काश, रीता दीदी के साथ ऐसा अन्याय न हुआ होता।
मुझे शिकायत है कि मेरी शादी उस उमर में हुई जब मैं तन–मन से गृहस्थी और मातृत्व का बोझ उठाने लायक ही नहीं थी।
हमें अपनी गलती पर बहुत पछतावा है।

मुझे खुशी है कि मीता ने सही फैसला लिया। काश, मुझमें भी ऐसा साहस होता।
दीदी, अभी भी बहुत देर नहीं हुई। आप अभी भी आगे पढ़ाई कर सकती हो।

सरकार सभी की शिक्षा पर बहुत जोर दे रही है। कई कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। आप अपनी शिक्षा ओपन स्कूल के माध्यम से जारी रख सकती हैं।
कितने सारे रोजगारन्मुखी कोर्स चलाए जा रहे हैं। वो करके आप आर्थिक रूप से सक्षम बन सकती हैं।

मैं अपने गाँव जाकर इस बारे में पता करती हूँ।
हाँ, अभी भी आप अपने भविष्य को सँवार सकती हैं।

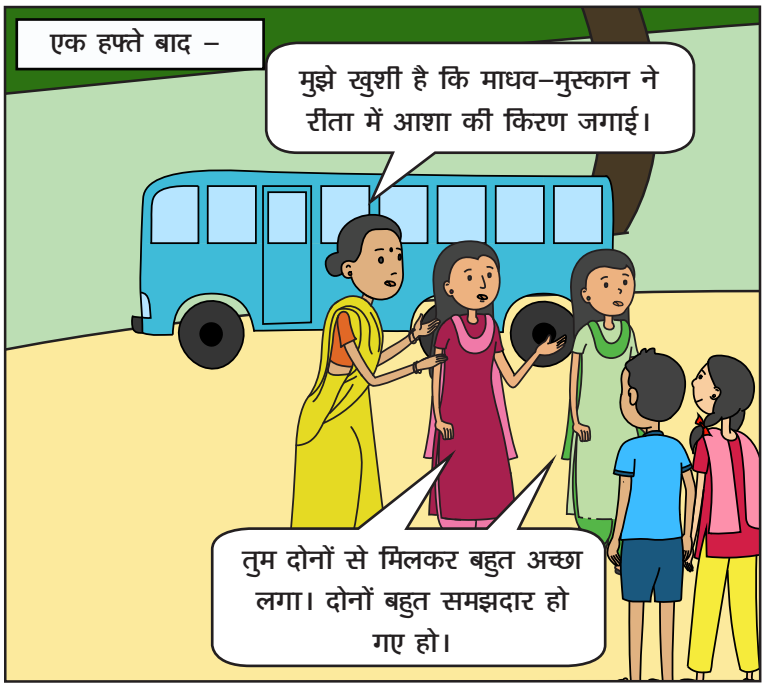
एक हफ्ते बाद –
मुझे खुशी है कि माधव–मुस्कान ने रीता में आशा की किरण जगाई।
तुम दोनों से मिलकर बहुत अच्छा लगा। दोनों बहुत समझदार हो गए हो।

रीता दीदी को देख समझ में आ गया कि बाल विवाह का क्या हश्र होता है।
और बाल विवाह न करने वालों का भविष्य किस तरह सँवरता है यह मीता दीदी से समझ आया।

अब हम दुगुने जोश से बाल विवाह रोकने के अभियान में मदद करेंगे।
द शो मस्ट गो ऑन। चलो देखते हैं रश्मि दो दिन से स्कूल क्यों नहीं आई ?
अगले अंक में हम सब रश्मि के घर चलेंगे। देखते हैं वहाँ हमें क्या देखने को मिलता है ?

पढ़ी गई कहानी के अनुसार, हम कुछ मुद्दों पर चर्चा करेंगे:

बाल विवाह का दुष्परिणाम

बाल विवाह के शारीरिक, मानसिक और आर्थिक दुष्परिणाम क्या होते हैं ?

सामाजिक मान्यताएं

बाल विवाह करने के पीछे सामाजिक मान्यताएँ क्या हैं ?

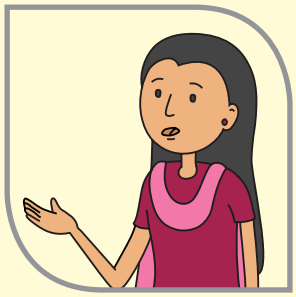

महिला सशक्तिकरण

मीता ने शादी के लिए मना क्यों किया ?

भविष्य की योजना

पढ़-लिखकर मीता ने अपना करियर कैसे बनाया ?

बाल विवाह निरोधक गतिविधि

सर्वशिक्षा अभियान और ओपन स्कूल से शिक्षा जारी रखने में मदद कैसे मिल सकती है ?

बाल विवाह निरोधक गतिविधि

बाल विवाह रोकने में आप किन-किन की मदद ले सकते हैं ?

याद रखने वाले मुख्य संदेश

बाल विवाह

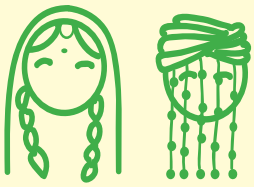

शारीरिक, मानसिक और आर्थिक दुष्परिणाम

❖ शारीरिक दुष्परिणाम

कम उम्र में गर्भाधान के मामलो में वृद्धि, इस स्थिति में एनिमिया होने की प्रबल संभावना।
समय से पहले प्रसव की अधिक घटनाएँ।
माताओं की मृत्यु दर में वृद्धि।
गर्भपात और मृत प्रसव की ऊँची दर।
शिशु मृत्यु दर और अस्वस्थता दर में वृद्धि।

❖ मानसिक और सामाजिक दुष्परिणाम

घरेलू हिंसा और लिंग आधारित हिंसा (कम उम्र की लड़कियाँ, जिनके पास रूतबा, शक्ति एवं परिपक्वता नहीं होते, अक्सर घरेलू हिंसा, सेक्स सम्बन्धी ज़्यादतियों एवं सामाजिक बहिष्कार का शिकार होती हैं।)
बच्चों के अवैध व्यापार और लड़कियों की बिक्री में वृद्धि
बच्चों द्वारा पढ़ाई छोड़ने की घटनाओं में वृद्धि
बाल मजदूरी और कामकाजी बच्चों का शोषण
लड़कियों पर समय से पहले घरेलू कामकाज की जिम्मेदारी।

❖ आर्थिक दुष्परिणाम

कम उम्र में विवाह लगभग हमेशा शिक्षा या अर्थपूर्ण कार्यों से वंचित करता है जो उनकी निरन्तर गरीबी का कारण बनता है।

सामाजिक मान्यताएं

❖ बाल विवाह करने के पीछे सामाजिक मान्यताएँ क्या हैं ?

सामाजिक प्रथाएँ एवं परम्पराएँ – बाल विवाह एक प्रथा है।
लड़कियाँ बोझ मानी जाती है।
लड़कियों की शिक्षा का निचला स्तर।
लड़कियों को कम रूतबा दिया जाना ।
उन्हें आर्थिक बोझ समझना।
कम उम्र में विवाह करने में दहेज कम देना पड़ता है।

❖ ओपन स्कूल म–प्र– राज्य मुक्त स्कूल

म.प्र. राज्य मुक्त स्कूल शिक्षा परिषद द्वारा शिक्षा की वैकल्पिक व्यवस्था अत्यधिक लचीली मुक्त शिक्षा के माध्यम से की जाती है द्य छात्रों को कक्षा 10वीं तथा 12वीं की इस लचीली शिक्षा के माध्यम से शिक्षित होने के कई अवसर लगातार उपलब्ध कराए जाते हैं द्य प्रदेश के सभी जिलों में स्थापित अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से ऑनलाइन प्रवेश की सुविधा प्रदान की जाती है द्य म.प्र. राज्य मुक्त स्कूल शिक्षा परिषद की योजनाओं में परीक्षार्थियों को परीक्षा उत्तीर्ण करने हेतु लगातार 9 अवसर प्रदान किए जाते हैं द्य छात्र के उत्तीर्ण विषयों का संकलन तब तक किया जाता है द्य जब तक कि वह पूरे 5 विषयों को परीक्षा पास नहीं कर लेता छात्र को 5 विषयों की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद अंकसूची तथा प्रमाणपत्र दिए जाते हैं।

साथिया

भूमिकाएं और जिम्मेदारियां

- आशा की सहायता से गांव में 10 से 19 वर्ष की आयु के सभी किशोर/किशोरियों की सूची तैयार करना।
- स्वास्थ्य एवं संरक्षण के मुद्दों के संबंध में मिथकों और भ्रांतियों को दूर करने में किशोर/किशोरियों की सहायता करना।
- आशा/ए.एन.एम. की सहायता से आवश्यकता पड़ने पर चिकित्सीय व सुरक्षा संबंधी जरुरत में दूसरी जगह रेफर करवाना।
- किशोर/किशोरियों की बातों की हमेशा गोपनीयता बनाए रखना।
- बच्चों और किशोर/किशोरी पर हिंसा के मामलों को पुलिस या बाल संरक्षण अधिकारी को सूचित करना।
- हिंसा के शिकार व्यक्ति की चिकित्सा देखभाल एवं परामर्श लेने और कानूनी सहायता हासिल करने में सहायता करना।
- धर्म, जाति, वर्ग, जेंडर या वैवाहिक स्थिति पर विचार किए बिना सभी किशोर/किशोरियों तक पहुंचना।

पहला अंक

दूसरा अंक

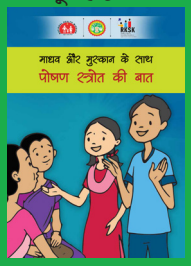

तीसरा अंक

चौथा अंक

पांचवां अंक

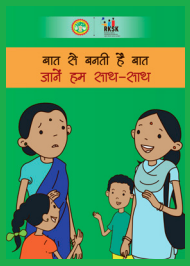

छठा अंक

सातवां अंक

आठवां अंक

नौवां अंक

दसवां अंक

ग्यारहवां अंक

बारहवां अंक

तेरहवां अंक

चौदहवां अंक

पंद्रहवां अंक

सोलहवां अंक

सत्रहवां अंक

अठारहवां अंक

उन्नीसवां अंक

UNFPA

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष के सहयोग से, मध्य प्रदेश सरकार द्वारा रूपांकित